शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Aproved Journal No. 40908

उत्तर प्रदेश में भाजपा की जीतः एक समीक्षा (चुनाव 2017)

डॉ0 शिवाली अग्रवाल
एसो0 प्रोफे0,राजनीति विज्ञान विभाग, इस्माईल नेशनल महिला पी0जी0 कॉलिज, मेरठ

सारांश

उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की अभूतपूर्व विजय राजनीति के विद्वानों के लिये एक शोध का विषय है। 14 वर्षो के बाद, उत्तर प्रदेश में जहाँ भारतीय जनता पार्टी को स्वयं भी 250 से 280 तक की सीट आने की उम्मीद थी 325 का जादुई आंकड़ा अत्यन्त सुखद आश्चर्य था। चुनावों की समीक्षा करने पर बहुत सारे कारण सामने थे। किसानों की स्थिति, मोदी का करिश्मात्मक व्यक्तित्व, जातीय वर्गो का भारतीय जनता पार्टी की तरफ बढ़ता रूझांन, मुस्लिम महिलाओं द्वारा मोदी का समर्थन, और नोटबंदी बहुत से कारण रहे भाजपा की उत्तर प्रदेश में जीत के।

महत्वपूर्ण शब्दः *1. उत्तर प्रदेश 2. विधान सभा चुनाव 3. जातियों की राजनीति 4. मुस्लिम महिलायें*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ0 शिवाली अग्रवाल, "उत्तर प्रदेश में भाजपा की जीतः एक समीक्षा (चुनाव 2017)",
शोध मंथन जून 2017,
पेज सं0 7–14
http://anubooks.com/?page_id=2030
Artcile No.2(SM409)

डॉ0 शिवाली अग्रवाल

प्रस्तावना

उत्तर प्रदेश चुनाव 2017, देश के इतिहास में भाजपा ने एक नया अध्याय रचा। 403 सीटों में से 14 वर्षो बाद 325 सीटों पर प्रचण्ड बहुमत के साथ अपना झण्डा लहरा दिया। केन्द्र में भाजपा के होते हुये भी आशंका थी कि उत्तर प्रदेश में भाजपा पूर्ण बहुमत प्राप्त न कर पायेगी, परन्तु एक प्रचण्ड आँधी की तरह उत्तर प्रदेश में भाजपा आयी। बहुत सारी अटकलों, किन्तु परन्तु के बीच उत्तर प्रदेश में उसकी ताजपोशी हो गयी। इस शोध पत्र के माध्यम से हम भाजपा की अप्रत्याशित जीत के कारणों की समीक्षा करेगें और जानने का प्रयास करेंगे कि आखिर विपक्षी दलों की एकता, प्रधानमंत्री मोदी जी के हर निर्णय पर उठती हजारों करोड़ों उँगलियों के बावजूद वो कौन से कारण रहे जिन्होंने भाजपा को उत्तर प्रदेश में इतिहास रचने में सहायता की। उत्तर प्रदेश में 1991 में भाजपा बहुमत में आई थी उस समय 419 सीटों में से 221 सीट भाजपा को मिली थी।[1]

राम मन्दिर लहर और राम के नाम पर ये सीटें जीती गयी थी परन्तु अब की ये जीत केवल मोदी के नाम पर प्राप्त की गयी। लोकसभा चुनाव 2014 में मोदी लहर ने जो दिखाया उसका अप्रत्यक्ष असर उत्तर प्रदेश में चल रहा था। लोकसभा चुनाव 2014 में मोदी जी ने कहा था ''हम परिश्रम की पराकाष्ठा करेगें, जो कुछ भी करेगें पूरी प्रमाणकिता के साथ करेगें। हमसे गलतियाँ हो सकती है लेकिन हम गलत इरादे से कोई काम नहीं करेगें।[2]

बोलने की कला और विशाल रैलियों में उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व चमका और विपक्षियों पर निशाना साधना ही उनकी सफलता का परीक्षण रहता है। मोदी जी विपक्षियों की कमियों को चुटीलें अन्दाज में प्रस्तुत करते हुये कब भारतवासियों के हृदय पर कब्जा करते हैं ये वोटों की गिनती से पता चलता है।

उत्तर प्रदेश में भाजपा की जीत के कारणों की समीक्षा करने पर सर्वप्रथम किसानों की स्थिति प्रमुखता से आती है :

यदि उत्तर प्रदेश में किसानों की स्थिति पर दृष्टि डाले तो पता चलता है कि उत्तर प्रदेश में किसानों व कृषि की स्थिति सही नहीं है। कभी बीज न मिलना, गन्ने का समय पर भुगतान न होना, गन्ने के अच्छे दाम न मिलना, खाद्य–पानी की व्यवस्था न होना आदि ऐसे कारण है जो किसानों की बदतर स्थिति को बयां करते है। बीज के लिए महाजन के कर्ज के दबाव में किसान की पीठ दोहरी हो जाती है। इसी कर्ज के बढते दबाव के कारण किसान आत्महत्या को मजबूर हो जाता है। हमारा देश कृषि प्रधान देश है। किसान हमारे अन्नदाता होते है। यदि यहाँ के किसानों की स्थिति ही अच्छी नहीं होगी तो देश कभी विकास नहीं कर पायेगा।

भाजपा ने किसानों की स्थिति को देखते हुए उत्तर प्रदेश में गांवों व किसानों पर काफी जोर दिया। भाजपा के संकल्प पत्र में किसानों व कृषि को प्राथमिकता के रूप में रखा गया। भाजपा का सबसे ज्यादा फोकस गांवों व किसानों पर ही था। भाजपा ने अपने चुनावी घोषणा–पत्र में किसानों की ऋण माफी, किसानों को ब्याज मुक्त फसली ऋण, भविष्य में गन्ना किसानों को फसल बेचने के 14 दिनों के भीतर पूरा भुगतान सुनिश्चित करने की व्यवस्था,

पशुधन विकास आदि की घोषणाएं की।[3]

विपक्ष ने भाजपा पर आरोप लगाया कि भाजपा किसानों की विरोधी है लेकिन भाजपा के नेता हर रैलियों, सभाओं में किसानों के लिए बोले। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने वाराणसी में अपना वादा दोहराया कि अगर भाजपा की प्रदेश में सरकार बनी तो पहली बैठक में किसानों का कर्जा माफ किया जायेगा। मोदी जी ने कहा कि 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने का संकल्प है, इसका रोडमैप तैयार है।[4] भाजपा ने गाँव–गाँव में षौचालय बनाने की योजना भी चलायी जिसमें गाँव के लोगों ने इसका समर्थन किया। उत्तर प्रदेश चुनाव में भाजपा ने किसानों व गांवों के लिए सर्वाधिक घोषणाएं की थी। किसानों को भी लगा कि अब उनके अच्छे दिन आ जायेगें। इसी कारण से उन्होंने भारतीय जनता पार्टी को अपना समर्थन दिया।

''इस चुनाव में सबसे अच्छी बात यह रही कि जनता ने परम्परागत कास्ट फैक्टर के बजाय अलग पैटर्न से वोट दिया। जनता ने जात–पात को दरकिनार कर विकास के लिए वोट दिया। इस बदलाव को राजनीतिक जानकार भी नहीं जान पाये। उत्तर प्रदेश में बीते तीन दशकों से जाति की राजनीति का बोलबाला रहा है। यहाँ जाट, दलित, मुस्लिम, गुर्जर जैसी बडी संख्या वाले मतदाताओं ने लम्बे समय तक कुछ खास दलों का साथ दिया। जाट रालोद के, दलित बसपा के, मुस्लिम सपा के वोट बैंक थे। चुनावों में इनकी रैलियों में भारी भीड जुटी लेकिन जब चुनाव के नतीजे आये तो पता चला कि जाटों ने भारी संख्या में भाजपा को वोट दिया और अजित सिंह को सिर्फ छपरौली से संतोष करना पडा। राजनीति के जानकार भी यही मानकर चल रहे थे कि जातियां पुराने पैटर्न पर वोट करेगी लेकिन जातियों ने अपने मूल दलों के बजाय बडे पैमाने पर भाजपा को वोट दिया।[5] यदि जाति व धार्मिक अस्मिता के आधार पर पारम्परिक तौर पर जनता ने अपना मत दिया होता तो उत्तर प्रदेश में लगभग एक तिहाई वोट भाजपा के खिलाफ जाते।

नतीजे बता रहे है कि भाजपा गांव देहात में जातीय बेडियों को तोडने में कामयाब और सत्ता की नाकामयाबियों को भुनाने में सफल रही है। विपरीत धाराओं में चलने वाले ब्राहमण व क्षत्रिया भाजपा के पक्ष में एकजुट हो गये। कई ग्रामीण इलाकों में ब्राहमणों ने ब्राहमण प्रत्याशी को दरकिनार कर भाजपा के जिताऊ प्रत्याशी को वोट दी। भाजपा ने ग्रामीण इलाकों में पडने वाली 299 सीटों पर खासी मशक्कत की थी। भाजपा ने 112 के करीब अन्य पिछड़ा वर्ग को टिकट दिया। अति पिछडी जातियों को अपने पाले में करने के लिए संदेश दिया कि दूसरे दलों में उन्हें क्या मिला? दलित–पिछडा वर्ग सम्मेलन हुए। यही से भाजपा की फतह का सफर शुरू हो गया।''[6] पिछले चुनावी मुकाबलों में दलित वोटो पर सपा–बसपा–कांग्रेस ने अच्छा प्रदर्शन किया था लेकिन इस बार सपा–बसपा को पीछे छोड़ते हुए भाजपा ने दलित वोट में सेंध लगायी। 40% वोट अति दलित ने भाजपा को दिया जबकि 2012 में 3% दलितों ने भाजपा को वोट दिया था। इसके अलावा 10% मुस्लिमों ने भी भाजपा को वोट दिया है। इसका कारण यह है कि भाजपा की रणनीति में तुष्टीकरण का अभाव था जबकि दूसरे दल तुष्टीकरण की नीति अपना रहे थे।

भाजपा की इस विराट जीत के पीछे कहीं–न–कहीं सर्जिकल स्ट्राइक भी एक कारण

है। पाकिस्तान की तरफ से हमारे देश के जवानों पर हो रहे हमलों को रोकने में पिछली केन्द्र सरकार नाकामयाब रही जिसके कारण जनता का विश्वास उस सरकार से उठने लगा। भाजपा सरकार ने केन्द्र में आने के बाद सर्जिकल स्ट्राइक के माध्यम से पाकिस्तानी सेना को मुँहतोड़ जवाब दिया और विश्व में यह संदेश दिया कि भारत डरने वालों में से नहीं है। यदि कोई भारत की तरफ गलत इरादों से देखेगा तो भारत उसका मुँहतोड जवाब देगा। भारत की जनता को भाजपा का यह कदम (सार्जिकल स्ट्राइक) अच्छा लगा क्योंकि देश की जनता भी इसी तरह की कार्यवाही की अपेक्षा कर रही थी। जनता को यह लगा कि कोई प्रधानमंत्री ऐसा आया है जो पाकिस्तान को जवाब दे सकता है। इस आधार पर भी जनता भाजपा को पसन्द करने लगी। उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव में भाजपा को जीताकर जनता ने सर्जिकल स्ट्राइक पर अपनी मुहर लगा दी।

8 नवम्बर 2016 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने 500 व 1000 के नोट बन्द करने की घोशणा की। इसका उद्देश्य देश में जमा काले धन को बाहर निकालना था। चुनावों से पहले भाजपा सरकार का यह निर्णय लेना काफी हिम्मत भरा कदम था। विरोधियों ने इसका बहुत विरोध किया। चारों तरफ से भाजपा को घेरने की बहुत कोशिश की गयी। विपक्षी पार्टियों को लग रहा था कि नोटबन्दी का भाजपा पर नकारात्मक असर होगा। चुनावों में भाजपा को वोट नहीं मिलेगें, लेकिन नोटबंदी का भाजपा के पक्ष में सकारात्मक असर हुआ। लोग बैंकों की लाइनों में घण्टों–घण्टों लगे रहे, उन्हें काफी परेशानियों का सामना करना पडा लेकिन जनता ने मोदी जी का साथ दिया। जनता को मोदी जी का यह कदम अच्छा लगा। नोटबन्दी का असर यह हुआ कि बेईमानों के खिलाफ लड़ाई में गरीब प्रधानमंत्री मोदी के साथ खड़े हो गये। विपक्षी दल सोचते थे मोदी न खाऊँगा, न खाने दूंगा' तक ही सीमित रहेगें लेकिन उन्होंने यह नहीं सोचा था कि प्रधानमंत्री उनका काला धन निकलवा सकते है।[7]

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी पर लोगों ने पूरा भरोसा किया। इसकी कई वजहें है। उनकी सरकार के तकरीबन 3 साल कार्यकाल में उनके खिलाफ भ्रष्टाचार का कोई आरोप तक नहीं लगा। यहाँ तक कि उन्होंने अपने मंत्रीमंडल पर भी भ्रष्टाचार की काली छाया नहीं पड़ने दी है। मोदी जी का कहना है– ''ना खाऊँगा ना खाने दूंगा''। जब ऐसी भली मंशा वाला प्रधानमंत्री उत्तर प्रदेश में जाकर लोगों से समर्थन मांगेगा तो लोग उस पर विश्वास क्यों नहीं करेगें? इसके विपरीत 2014 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की हार के पीछे मनमोहन सरकार के बडे घोटालों का हाथ था। जानकारों का मानना है कि मोदी सरकार अभी आम लोगों के फायदे के लिए कुछ और कदम उठा सकती है जिससे विपक्ष का बचा–खचा दम निकल सकता है। उत्तर प्रदेश की विराट जीत के बाद मोदी सरकार को बेनामी सम्पत्ति के खिलाफ कानून बनाने में बडी ताकत मिलेगी जिस पर वह काफी समय से विचार कर रही थी। महिला आरक्षण विधेयक भी पारित हो सकता है। ऐसे तमाम चौकानें वाले फैसलें हो सकते है। यदि मोदी सरकार महिला आरक्षण विधेयक पारित करने के साथ बेनामी सम्पत्ति के खिलाफ कारगार अभियान छेडती है तो 2019 के लोकसभा चुनाव का नतीजा भी तय मानिए।

हालिया जीत को लेकर आम धारणा यही है कि यह मोदी की ईमानदार मंशा की जीत है। इस जीत से बेशक विरोधियों के हौसले पस्त हो गये होगें। विरोधियों को सबक लेना चाहिए कि जनता अब सुषासन चाहती है। अब मतदाता पुराने ढर्रे वाली राजनीति से छुटकारा चाहते है। वे किसी ऐसे कदम का समर्थन नहीं कर सकते जो देश की एकता–अखंडता पर चोट करता हो।[8]

उत्तर प्रदेश चुनाव (विधान सभा चुनाव) 2017 में बसपा से स्वामी प्रसाद मौर्य तथा कांग्रेस से रीता बहुगुणा जोशी भाजपा में सम्मिलित हुई जिसका लाभ भी भाजपा को मिला। स्वामी प्रसाद मौर्य की मौर्य वोट बैंक पर अच्छी पकड़ है जिसका लाभ भाजपा को मिला वही रीता बहुगुणा जोशी की पर्वतीय समाज और ब्राहम्णों की नेता के रूप में पहचान है, भाजपा में आने से उत्तर प्रदेश के साथ–साथ उत्तराखण्ड चुनाव में भी भाजपा को फायदा मिला।[9]

भाजपा की जीत के पीछे संघ का बहुत हाथ था। भाजपा के द्वारा जो भी नीतियाँ बनायी जाती है उनमें संघ का योगदान रहता है। भाजपा में उम्मीदवारों के टिकट कटने को लेकर चल रही नाराजगी को संघ के द्वारा दूर किया। भाजपा ने अपने नाराज कार्यकर्ताओं को संघ के द्वारा ही मनाया। चुनावी दौरों में बनारस समेत पूर्वांचल की कमान संघ ने अपने हाथ में ले ली।[10] इसके साथ ही संघ का पूरा नेटवर्क खामोषी के साथ भाजपा के पक्ष में प्रचार में जुटा रहा।

चुनाव के दौरान भाजपा की तरफ से यह कहा गया कि उत्तर प्रदेश में यदि भाजपा की सरकार बनती है तो भाजपा तीन तलाक को खत्म करेगी। मुस्लिम भाजपा को एक हिन्दूवादी पार्टी समझते हैं और उसे वोट न के बराबर देते है। इस चुनाव में भाजपा ने तीन तलाक का मुद्दा उठाकर मुस्लिम महिलाओं को अपने पक्ष में करने की कामयाब कोशिश की है।'' 30 फीसदी से ज्यादा मुस्लिम आबादी वाले क्षेत्रों में पुरूषों की तुलना में महिलाओं का अधिक मतदान तथा उन क्षेत्रों में भाजपा के जीतने से यह संभावना प्रतीत होती है। नतीजे बता रहे है जो क्षेत्र मुस्लिम बहुल है वहां पुरूषों की तुलना में महिलाओं ने अधिक वोट डाले। इन महिलाओं ने पारम्परिक बंधन को तोडने का जोखिम उठाया है। तीन तलाक के मुददे पर केन्द्र सरकार का समर्थन करती आ रही शाइस्ता अंबर का कहना है कि मुस्लिम महिलाएं अपने हक के लिए संघर्ष करने को तैयार होने लगी है। वे शरीयत की रोशनी में न्याय चाहती है, फतवों के आधार पर नहीं। ऐसे में यदि मुस्लिम महिलाओं ने भाजपा को वोट दिया तो आश्चर्य कैसा?''

राजनीतिक विश्लेषक भी मानते है कि मुस्लिम बहुल इलाकों में जिस तरह से मतदान हुआ और विभिन्न दलों में वोटों के बंटवारे के बाद भी भाजपा प्रत्याशी की जीत हुई, उससे प्रतीत होता है कि मुस्लिम महिलाओं का कुछ वोट भाजपा को भी गया।''[11]

30% से ज्यादा मुस्लिम आबादी वाले क्षेत्र[12]

क्षेत्र	पुरूष %	महिला %	सीट
नौगाँव	74.57%	77.94%	भाजपा
धामपुर	65.01%	71.64%	भाजपा
चांदपुर	67.77%	72.10%	भाजपा

खतौली	70.01%	71.62%	भाजपा
मीरापुर	68.77%	70.13%	भाजपा
धनौरा	68.02%	72.42%	भाजपा
हसनपुर	72.98%	75.63%	भाजपा
बदायूँ	59.60%	60.48%	भाजपा
बिल्सी	57.90%	59.44%	भाजपा
शेखूपुर	60.59%	64.46%	भाजपा
बढापुर	62.91%	68.79%	भाजपा
बेहट	74.36%	75.36%	भाजपा
रामपुर	73.01%	73.72%	भाजपा
दरियाबाद	63.94%	67.35%	भाजपा
कांठ	70.03%	72.18%	भाजपा
थाना भवन	67.93%	68.80%	भाजपा

भाजपा को जीत में सपा व कांग्रेस के गठजोड़ का विशेष हाथ रहा। सपा तथा कांग्रेस एक दूसरे के धुर विरोधी थे। चुनावों में एक दूसरे पर आरोप लगा रहे थे। कांग्रेस को लगा कि षायद वह सत्ता में नहीं आ पायेगी, सपा भी यही सोच रही थी। दोनों पार्टियों ने गठबंधन किया, उन्हें लगा कि गठबंधन उत्तर प्रदेश में सफल हो जायेगा। दोनों पार्टियां इसे सकारात्मक दृष्टि से देख रही थी किन्तु इसका उलटा हुआ क्योंकि जनता इतनी नासमझ तो नहीं है कि वह यह न समझे कि गठजोड़ कुर्सी पाने के लिए हुआ। जो पार्टियां एक–दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप मढ रही थी, सत्ता के लालच में एक हो गयी। सत्ता के लालच में किया गया यह गठबन्धन उत्तर प्रदेश की जनता ने सिरे से नकार दिया। इसके अतिरिक्त सपा व कांग्रेस के नेता रैलियों में भाजपा की बुराई किए जा रहे थे। उनके पास इसका स्पष्ट कारण भी नहीं था। जनता ने सपा के पारिवारिक कलह को भी देखा। मुलायम के पारिवारिक कलह के कारण जनता में भ्रम की स्थिति रही और वोट बंट गया जो अधिकांशतः भाजपा में चला गया।

भाजपा के नेताओं के समय–समय पर हिन्दूवादी बयान आते रहते है। भाजपा के नेता खुले तौर पर इसे स्वीकार नहीं करते किन्तु अन्दरूनी रूप से हिन्दुत्व का पूरा समर्थन करते है। यही कारण है कि मुस्लिम भाजपा को एक हिन्दूवादी पार्टी समझते है। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में भाजपा ने राम मन्दिर, लव जेहाद जैसे मुददों को उठाया। भाजपा की तरफ से यह भी कहा गया कि जो हिन्दुस्तान से प्यार नहीं करेगा, वह पाकिस्तान चला जाए। ऐसा नहीं है कि भाजपा ने पहले भी ऐसे बयान नहीं दिये। आदित्यनाथ जी 2014 में लव जेहाद को लेकर एक वीडियो में कथित तौर पर कहते दिखे कि ‘‘अगर वे एक हिन्दू लडकी का धर्म परिवतन कराएगें तो हम 100 मुस्लिम लड़कियों का धर्मान्तरण कराऐगें उन्होंने यह भी कहा कि योग का विरोध करने वालों को भारत छोड देना चाहिए। 13 भाजपा ने मुस्लिम को एक भी टिकट नहीं दिया।

दूसरी ओर पिछली सरकार मुस्लिमों के पक्ष में ज्यादा थी। लड़कियों के साथ छेड़छाड की घटनाएं बढ रही थी इन्हीं कारणों से हिन्दूओं का ध्रुवीकरण हो गया।

भाजपा ने उत्तर प्रदेश में यूं ही प्रचड बहुमत नहीं पाया। इसके लिए भाजपा के अध्यक्ष अमित शाह के नेतृत्व में व्युह रचना 2014 के लोकसभा चुनाव के बाद ही बननी शुरू हो गयी थी। उत्तर प्रदेश में चुनाव जीतने के लिए भाजपा ने कुछ रणनीतियां बनायी जिनमें से कुछ निम्नलिखित है :—

1. भाजपा ने चुनावों के दौरान विपक्ष पर तीखा हमला बोला। कभी बूचडखाने, शमशान का मुददा उठाया कभी कहा कि ईद पर बिजली आती है दीवाली पर नहीं। ऐसा कहकर उन्होंने हिन्दूओं का समर्थन लेने की पूरी कोशिश की। सपा, बसपा, कांग्रेस की कमियों को जनता के बीच लेकर गये। भाजपा ने पश्चिमी यू0पी0 में गुण्डाराज और तुष्टीकरण को मुद्दा बनाया। यौन शोषण के मामले में फंसे सपा नेता गायत्री प्रजापति को लेकर अखिलेश यादव पर जमकर निशाना साधा।

2. ''भाजपा की जीत में केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री पीयूष गोयल ने पर्दे के पीछे से मुख्य भूमिका निभायी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी पसन्द और पार्टी अध्यक्ष अमित शाह के विश्वस्त पीयूष गोयल प्रदेश की चुनावी रणनीति तैयार करने में मुख्य भूमिका में रहे। भाजपा का हमेशा से वोट बैंक समझा जाने वाला बनिया समुदाय सरकार के नोटबन्दी के फैसले से नाराज था। गोयल इस वर्ग के प्रमुख लोगों के साथ बैठकें कर उनकी नोटबंदी को लेकर शिकायतों को दूर करने में लगे हुए थे। वह खुद भी इसी वर्ग में आते है इसीलिए नेतृत्व मान रहा था कि उनकी बात को समुदाय गंभीरता से लेगा। इसके अलावा केन्द्र सरकार की उपलब्धियों को प्रभावी तरीके से लोगों तक पहुँचाने का कार्य गोयल जी का ही था। सोशल मीडिया पर नजर रखना ताकि विरोधियों के हमलों का तुरन्त जवाब दिया जा सके, उन्हीं की देखरेख में था।''[14]

3. भाजपा में टिकट के बंटवारे से कुछ लोग नाराज थे। उनकी नाराजगी दूर करने का कार्य किया गया। टिकट के बंटवारे में भाजपा ने सभी जातियों को संतुष्ट करने का प्रयास किया। ठाकुर, ब्राहमणों को काफी टिकट दिये गये।

4. उत्तर प्रदेश चुनाव में भाजपा ने मुख्यमंत्री का चेहरा छिपाकर रखा। भाजपा ने वोट बंट जाने के कारण मुख्यमंत्री का चेहरा छिपाकर रखा। यह रणनीति यह दिखाती है कि भाजपा जात—पात या परिवादवाद की राजनीति नहीं करती।

5. केशव प्रसाद मौर्य को प्रदेश अध्यक्ष बनाना भी रणनीति के तहत था। इससे दलित वर्ग उनके साथ जुडा। बसपा की रणनीति से भी भाजपा को फायदा मिला बसपा सुप्रीमों मायावती के मुस्लिम—दलित कार्ड को मतदाताओं ने नकार दिया। 403 सीटों में से बसपा को 19 सीटें ही मिल पायी। बसपा का मुस्लिम प्रेम उस पर भारी पड़ा।

इसमें कोई संदेह नहीं कि उत्तर प्रदेश चुनाव परिणामों ने परम्परागत राजनीति में नये परिवर्तनों का शंखनाद कर दिया पुराने जातिगत ढांचे की बिखेर दिया और विपक्षी खेमें को चेता दिया गया कि अब जाति और धर्म के मुददे से हटकर जनता ने सोचना प्रारम्भ कर दिया है सारी बंदिशें तोडकर मुस्लिम महिलाओं ने मोदी जी का समर्थन किया यह एक आश्चर्यजनिक घटना

थी जिसका राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित भी भविष्यवाणी न कर पाये। उत्तर प्रदेश में भाजपा की जीत निष्चित ही भारतीय राजनीति में सकारात्मक परिवर्तन तथा भारतीय मतदाता की जागरूकता का परिचायक है।

संदर्भ सूची

1. हिन्दुस्तान अखबार 12 मार्च 2017, पृष्ठ सं0 10
2. हिन्दुस्तान अखबार 13 मार्च 2017, पृष्ठ सं0 1
3. हिन्दुस्तान अखबार 30 जनवरी 2017, पृष्ठ सं0 1
4. हिन्दुस्तान अखबार 7 मार्च 2017, पृष्ठ सं0 12
5. हिन्दुस्तान अखबार 13 मार्च 2017, पृष्ठ सं0 2
6. हिन्दुस्तान अखबार 12 मार्च 2017, पृष्ठ सं0 10
7. हिन्दुस्तान अखबार 4 मार्च 2017, पृष्ठ सं0 11
8. दैनिक जागरण 13 मार्च 2017, पृष्ठ सं0 8
9. हिन्दुस्तान अखबार 21 जनवरी 2017, पृष्ठ सं0 11
10. हिन्दुस्तान अखबार 2 मार्च 2017, पृष्ठ सं0 2
11.दैनिक जागरण 13 मार्च 2017, पृष्ठ सं0 2
12. दैनिक जागरण 13 मार्च 2017, पृष्ठ सं0 2
13.हिन्दुस्तान अखबार 19 मार्च 2017, पृष्ठ सं0 13
14. हिन्दुस्तान अखबार 3 मार्च 2017, पृष्ठ सं0 12